एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कुटकी की खेती

(*डॉ. अनिल प्रताप सिंह दोहरे[1], डॉ. राम भरोसे[2], अंकित कुमार वर्मा[3] एवं संतेन्द्र कुमार[3])
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रावस्ती
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रावस्ती
[3]आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rbharose1@gmail.com

कुटकी एक जड़ी–बूटी वाला पौधा है। आयुर्वेद में इसके बारे में काफी महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं। प्राचीन समय से ही कुटकी का इस्तेमाल रोगों के इलाज के लिए किया जाता रहा है। कुटकी एक औषधिया पौधा होता है। यह बहुत ही कड़वा एवं बारहमासी बहुवर्षीय पौधा है और इसकी पत्तियां 5 से 10 सेंटीमीटर लम्बी और पैनी होती हैं। प्राचीन काल से ही इसका उपयोग औषधि बनाने के लिए किया जाता रहा है। कुटकी एक छोटे से लगभग बालों वाली बारहमासी जड़ी बूटी है, जो रूट स्टॉक से एक लम्बी रेंगने वाले स्टोलन के साथ है। कुटकी को अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे – कटुका, कुरु, कटवी, कतूरोहिनी और कटकी। कुटकी देश में हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, सिक्किम और अरुणाचल परदेश की पहाड़ियाँ पर उगाई जाती हैं। वर्तमान समय में शारीरिक स्वस्थ को लेकर ग्रामीण एवं सहर्वासी सभी परेसान है इसके लिए लोग अपने पोषाहार में बदलाव करने लगे है लघु धन्य फसलो में पाया जाने वाला कार्बोहाईड्रेट चावल गेहू व अन्य अनाज की तुलना में अधिक धीमी गति से पाचन होकर रक्त में मिलता है। इसी गुण के कार इन फसलो को लोग अपने भोजन का अवयव बना रहे है। जिसके कारन रक्त में सर्करा की मात्र अन्य अनाजो की तुलना में कम हो जाती है।

100 ग्राम कुटकी में पोषक तत्वों की मात्रा

क्र0स0	पोषक तत्व	मात्रा
1	प्रोटीन (ग्राम)	7.7
2	वसा (ग्राम)	4.7
3	कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	67.0
4	ऊर्जा (किलो कैलोरी)	16.0

5	कैल्शियम (ग्राम)	17
6	आयरन (मि0ग्रा0)	6.0
7	फास्फोरस (मि0ग्रा0)	220
8	मैग्नीशियम (मि0ग्रा0)	91.0
9	जिंक (मि0ग्रा0)	1.82

भूमि की तैयारी– इसकी बुवाई का सही समय नवंबर से लेकर जनवरी महीने के बीच का होता है। अल्पाइन क्षेत्रों में इसकी खेती मई के माह में की जाती है। रेतीली धार वाली मिट्टी की परतें इसकी खेती के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती हैं। कुटकी की खेती के लिए उपयोग की जाने वाली जमीन को एक सप्ताह के लिए सौरीकरण के लिए खुला छोड़ा जाता है, जिससे मृदा की उर्वरक क्षमता अच्छी बनी रहे। कुटकी के उत्पादन के लिए एक एकड़ भूमि में लगभग 50000 पौधों को लगाया जा सकता है।

खाद एवं उर्वरक– कुटकी के लिए प्रति हेक्टेयर के खेत में 20 किलोग्राम नत्रजन और 20 किलोग्राम स्फुर तथा कोदो के लिए 20 किलोग्राम सल्फर और 20 किलोग्राम नत्रजन का इस्तेमाल करने से पैदावार में अधिक वृद्धि होती है। उर्वरक की बताई गई मात्रा को बुवाई के समय दे, तथा इसी की आधी मात्रा को बुवाई के तीन से 5 सप्ताह के मध्य देना होता है। इसके अतिरिक्त बुवाई के समय जैव उर्वरक के रूप में 4 से 5 किलोग्राम पी.एस.बी. को 100 किलोग्राम मिट्टी या कम्पोस्ट के साथ मिलाकर प्रति हेक्टेयर के खेत में डाले।

बीज उपचार– इन बीजो को बुवाई से पूर्व थायरम या मेंकोजेब 3 किलोग्राम की मात्रा को प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करते है। इस उपचार से बीज जनित व मिट्टी जनित रोग का असर फसल में बहुत ही कम होता है। कतारों में लगाए गए बीजो को 7 किलोग्राम की दूरी पर लगाया जाता है, तथा कतारे भी 20–25 सेमी0 की दूरी पर तैयार की जाती है। कोदो के बीजो को 2–3 सेमी0 की गहराई में लगाना होता है।

बुवाई का समय– कुटकी की बुवाई बीज के रूप में करते है। इन बीजो को वर्षा शुरू होने के पश्चात् बोना शुरू कर देना चाहिए। शीघ्र बुवाई करने से अधिक उपज प्राप्त होती है, तथा कीट और रोग का प्रभाव भी कम देखने को मिलता है। सूखी कोदो की बोनी मानसून आरम्भ होने के 10 दिन पहले कर दी जाती है। अन्य विधियों की तुलना में इससे अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। जुलाई महीने के अंत में बोनी करने पर फसल में तना मक्खी कीट रोग का प्रकोप नहीं बढ़ता है।

बीज की मात्रा– कुटनी की खेती में भूमि के अनुसार उन्नत किस्म के बीजो का चुनाव करे। जिन क्षेत्रों की भूमि पथरीली, दोमट, मध्यम गहरी, कम उपजाऊ भूमि में जल्द पकने वाली फसल तथा अधिक वर्षा वाली जगहों पर देर से पकने वाली किस्म को बोए। लघु धान्य की फसलों में प्रति हेक्टेयर के खेत में कतारों में बुवाई करने के लिए 8 से 10 किलोग्राम बीज लगते है, तथा छिटकाव भूमि में 12–15 किलोग्राम बीजो की जरूरत होती है। लघु धान्य भूमि में अक्सर छिटकाव विधि का इस्तेमाल किया जाता है।

उन्नतशील किस्मे–

उन्नत किस्मे	उत्पादन समय	पौधे की विशेषता	प्रति हेक्टेयर उत्पादन
ज्वाहर कुटकी –1	75–80 दिन	इस किस्म में बाली 22 सेमी0 लंबी होती है, जिसका बीज हल्का काला होता है।	8–10 क्विंटल
जवाहर कुटकी –8	80–85 दिन	इसका बीज आकार में अंडाकार और हल्का भूरा होता है।	8–10 क्विंटल
सी.ओ. –2	80–85 दिन	इसमें पोधा 80 सेमी0 लंबा और 8–9 किल्लो वाला होता है, जिसमे हल्के भूरे रंग के दाने निकलते है।	9–10 क्विंटल
पी.आर.सी– 3	75–80 दिन	इसका पोधा 100–110 सेमी0 लंबा होता है।	8–10 क्विंटल
जवाहर कुटकी –2	75–80 दिन	इसका बीज आकर में अण्डाकार और हल्का भूरा होता है।	8–10 क्विंटल

बी. एल.– 6	60–80 दिन	इसका बीज आकर में अण्डाकार और हल्का भूरा होता है।	10–15 क्विंटल
बी. एल.– 4	90–95 दिन	इसका बीज आकर में अण्डाकार और हल्का भूरा होता है।	10–12 क्विंटल
जे.के.– 4	65–70 दिन	इसका पोधा 95–100 सेमी0 लंबा होता है।	8–10 क्विंटल

खरपतवार नियत्रण– कुटकी की फसल में खरपतवार को रोकने के लिए निराई–गुड़ाई की जाती है। इसके अलावा जिन जगह पर पौधे नहीं उगे होते है, तो जिस जगह घने पौधे लगे हो वहा से उखाड़ कर लगा दे, ताकि पौधों की संख्या निरंतर बनी रहे। गुड़ाई को 20 दिन के अंतराल में करना होता है, पानी गिरने के दौरान यह प्रक्रिया करना सर्वोत्तम होता है।

कीट नियत्रण–

कीट	नियत्रण
तना मक्खी	500 लीटर पानी में 2-5 लीटर एजाडिरिक्टीन को मिलाकर प्रति हेक्टेयर के खेत में छिड़काव करे, या 500 लीटर पानी में इमिडाक्लोप्रीड 150 मिली0 डायमिथोएट 30 ईसी0 750 मिली0 की मात्रा को पानी में मिलाकर उसका छिड़काव करे। इसके अलावा 20 किलोग्राम मिथाइल पैराथियान डस्ट का भुरकाव प्रति हेक्टेयर के खेत में करे।
कुटकी की गाल मिज	क्लोरपायरीफास 1 लीटर या 20 किलोग्राम क्लोरपायरीफास पाउडर का भुरकाव प्रति हेक्टेयर की दर से करे
कुटकी का फफोला भृंग	500 लीटर पानी में 1 लीटर क्लोरपायरीफास दवा को मिलाकर प्रति हेक्टेयर के खेत में छिड़के।
कंबल कीट (हेयर केटर पिलर)	प्रति हेक्टेयर की फसल में 20 किलोग्राम डस्ट के साथ मिथाइल पैराथियान की 2 प्रतिशत का भुरकाव करेद्य

रोग एवं नियत्रण–

रोग	नियंत्रण
कंडवा रोग	प्रति किलोग्राम बीज की दर में 2 किलोग्राम वीटावेक्स को मिलाकर बीजो को उपचारित करे, तथा रोगग्रस्त बीजो हटा दे।
कोदों का धारीदार रोग	स रोग से बचाव के लिए बीज बुवाई के 40 से 45 दिन पश्चात् 500 लीटर पानी में 1 किलोग्राम मेन्कोजेब दवा को मिलाकर प्रति हेक्टेयर खेत में छिड़के।
कुटकी का मृदुरोमिल ग्रसित (डाऊनी मिल्डयू)	बुवाई के 40 से 45 दिन पश्चात् 500 लीटर पानी में डायथेन जेड–78 15 किलोग्राम की मात्रा का घोल बनाकर, प्रति हेक्टेयर के खेत में 15 दिन के अंतराल में छिड़काव करे।

फसल की कटाई– कुटकी के पौधे 3 से 5 महीने में पूरी तरह से परिपक्व हो जाते हैं। जमीन की ऊंचाई के हिसाब से इनकी प्रजनन की प्रक्रिया अलग–अलग होती है. अल्पाइन क्षेत्रों में पौधे सितंबर से अक्टूबर महीने के बीच ही पूरी तरह परिपक्व हो जाते हैं, जबकि कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में यह पौधे सितंबर माह के शुरू में परिपक्व होने लगते हैं। भारत देश में अधिकतर किसान कुटकी की कटाई सितंबर माह के शुरुआती दिनों में ही शुरू कर देते हैं।

भंडारण–कुटकी के जड़ों को काफी अच्छे से सुखाया जाता है और नमी से बचाने के लिए इस जूट की थैलियों में सुरक्षित रखा जाता है। एक एकड़ जमीन में लगभग 400 से 600 किलोग्राम कुटकी का उत्पादन होता है। आपको बता दें कि कुटकी का जीवन चक्र तीन वर्षों का होता है, जिसमें इसके बीजों को पकने में लगभग 1 से 2 वर्ष का समय लग जाता है।